IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आधे-अधूरे एवं पगला घोड़ा नाटक में चित्रित अस्तित्व की खोज

Dr. Mohit Mishra
Assistant Professor
IFTM University, Moradabad

आधे-अधूरे नाटक किसी वाद से प्रभावित नहीं लगता। आधुनिक नाटक होने के कारण इस नाटक में वर्तमान जीवन की विसंगतियों, विवशताओं और मानवीय कमजोरियों आदि का चित्रण हुआ है। किंतु न तो यह अस्तित्ववादी नाटक है और न ही विसंगतवादी। मोहन राकेश ने भारतीय जीवन शैली में आने वाले बदलाव को आधे-अधूरे में प्रस्तुत किया है। आधे-अधूरे में मध्यवर्गीय परिवारों के जीवन का सजीव वर्णन किया गया है। इस नाटक के प्रारंभ से ही अस्तित्व की खोज करते हुए व्यक्ति को चित्रित किया गया है। नाटक की प्रस्तावना में काले सूट वाला आदमी कहता है, "मैं वास्तव में कौन हूँ?-यह एक ऐसा सवाल है जिसका सामना करना इधर आकर मैंने छोड़ दिया है जो मैं इस मंच पर हूँ, वह यहाँ से बाहर नहीं हूँ, और जो बाहर हूँ... खैर, इसमें आपकी क्या दिलचस्पी हो सकती है कि मैं यहाँ से बाहर क्या हूँ? शायद अपने बारे में इतना कह देना ही काफी है कि सड़क के फुटपाथ पर चलते आप अचानक जिस आदमी से टकरा जाते हैं, वह आदमी मैं हूँ। आप सिर्फ घूरकर मुझे देख लेते हैं-इसके अलावा मुझसे कोई मतलब नहीं रखते कि मैं कहाँ रहता हूँ, क्या काम करता हूँ...1

मोहन राकेश ने आधुनिक मनुष्य को अपने जीवन में एक-दूसरे के महत्व को खोजते हुए प्रस्तुत किया है। मनुष्य के जीवन की परिस्थितियों को संबंधों के माध्यम से चित्रित किया है। आधे-अधूरे आज के सामाजिक परिवेश में अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत आधुनिक मानव के जीवन-अनुभवों की विडंबनाओं और उसकी यातनापूर्ण नियति को उजागर करने वाली परिस्थितियों से साक्षात्कार कराता है। यह नाटक समकालीन जीवन की स्थितियों पर आधारित है, जिसमें परिवारों के टूटने की विडंबना को दिखाया गया है। नाटक में मध्यवर्गीय जीवन के संदर्भ में व्यक्ति के परिवेश के साथ होने वाली तकरार, संबंधों की ऊब, एकरसता, तनाव तथा अकेलेपन को प्रस्तुत किया गया है। आधे-अधूरे नाटक में चित्रित परिवार में अजीब सी घुटन, मायूसी, अजनबीयत छाई हुई है। पुरुष की आर्थिक कमाई नहीं के बराबर है। उसके सारे आर्थिक प्रयास असफल हो चुके हैं। पत्नी की दृष्टि में वह फालतू और निकम्मा हो गया है। उसका अपने घर में ही कोई स्थान नहीं है। पुरुष और स्त्री के बीच बराबर किसी-न-किसी बाहरी आदमी का बना रहना भी इसके लिए उत्तरदायी है। सावित्री के लिए प्रतिभा येरेकार कहती हैं कि समकालीन काल की सावित्री के सम्मुख प्राचीन काल की सावित्री के जैसा जीवन का केवल एक ही उद्देश्य... पति को ही प्राप्त करना नहीं है बल्कि इसके अतिरिक्त भी अपने जीवन में बहुत कुछ प्राप्त करना है, उसे अपने जीवन से बहुमुखी अपेक्षाएँ हैं। अतः सावित्री के माध्यम से मोहन राकेश ने आधुनिक काल की उस नारी को प्रकट किया है, जिसे अपने जीवन में बहुत कुछ और एक साथ पाना है। और वह उसकी प्राप्ति के लिए अथक प्रयासरत है।"2 सावित्री समाज, परिवार में अपने अस्तित्व को स्थापित करना चाहती है। नौकरी करके घर का खर्च चला रही है परंतु घर का कोई भी सदस्य उसे महत्व नहीं देता इसलिए वह अपने अस्तित्व की खोज में बेचौन रहती है।

हिंदी साहित्य पर अस्तित्ववादी प्रभाव दूसरे विश्वयुद्ध के बाद पड़ता है। कविता, कहानी तथा उपन्यास में मनुष्य की विसंगत स्थिति, महानगरों की भीड़ तथा पारिवारिक संबंधों में मनुष्य के अकेलेपन, अजनबीपन तथा संत्रास का वर्णन किया गया है। अज्ञेय का उपन्यास अपने अपने अजनबी, धर्मवीर भारती का नाटक अंधायुग तथा मोहन राकेश का नाटक आधे-अधूरे व बांग्ला के नाटककार बादल सरकार भी पगला घोड़ा नाटक में मानव के अस्तित्व पर चिंतन करते हुए प्रतीत होते हैं।

आषाढ़ का एक दिन और लहरों के राजहंस नाटक में मोहन राकेश ने अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा के माध्यम से जहाँ ऐतिहासिकता के झरोखों से आधुनिक जीवन की विसंगतियों को दिखाया है। वही आधे-अधूरे में यथार्थ के धरातल पर आधुनिक जीवन की कड़वाहट और

उसके अधूरेपन को चित्रित किया है। नाटक में चित्रित पात्र अपने अस्तित्व की खोज करते नजर आते हैं। इसका कारण है कि परिवार की आर्थिक स्थिति मध्यवर्गीय स्तर से ढहकर निम्न मध्यवर्गीय स्तर पर अपने तीखेपन के अहसास से भरी हुई है।

आधे-अधूरे के बारे में नाट्य आलोचक गोविन्द चातक का कहना है कि "नाटक के प्रारंभ में ही घर के घर होने का आभास होने लगता है। इसमें गृहस्वामिनी का जो रूप सामने आता है, वह हर वक्त आमादा रहने वाली नारी का है। दूसरी ओर गृहस्वामी एक मूक निरपेक्ष पशु-तुल्य-अस्तित्व झेलता दिखाई देता है जिस पर एक चुप्पी थोप दी गई है। अपने ही अकर्मण्य जीवन की परिणति को निरीह होकर पत्नी की लताड़ों के बीच भोगता दिखाई देता है।"3

आधे-अधूरे कथावस्तु की दृष्टि से एक सामाजिक नाटक है। लेकिन यह मोहन राकेश के ऐतिहासिक नाटकों से सर्वथा कटा हुआ नहीं है। इसके सिर्फ बाह्य प्रतिमान बदले गए हैं, आंतरिक नहीं। यदि ध्यान से देखा जाए तो महेंद्रनाथ, सावित्री, अशोक, बिन्नी प्रायः एक ही धरातल पर एक ही परिवेश में खड़े होकर अपने आपको ही कोसते या अपनी अधूरी अस्मिता का दायित्व एक-दूसरे पर थोपते दिखाई देते हैं। नाटक में टूटे-थके और हारे जीवन की एकांतिक पीड़ा को एक व्यापक परिदृश्य से जोड़कर बहुत ही सीधे सपाट ढंग से उतारने की कोशिश महेंद्रनाथ में की गई है। आधुनिकता की नियति, अस्तित्व का संकट, परिवार का विघटन आर्थिक दबाव की कसमकश में व्यक्ति की तड़प को मोहन राकेश ने आधे-अधूरे के माध्यम से व्यक्त किया है।

महेंद्रनाथ अपने अस्तित्व को बार-बार घिस जाने वाले रबड़ के टुकड़े के समान समझता है। जिसका उपयोग उसकी पत्नी और बच्चे मात्र सामाजिक संरक्षण के लिए करते हैं। महेंद्रनाथ को उसके घर का कोई सदस्य महत्व नहीं देता। उसको सभी उपेक्षित करते हैं जिससे परेशान होकर महेंद्रनाथ पूछता है कि "कितने साल हो चुके हैं मुझे जिंदगी का भार ढोते? उनमें से कितने साल बीते हैं मेरे इस परिवार की देख-रेख करते? और उस सबके बाद मैं आज पहुँचा कहाँ हूँ? यहाँ कि जिसे देखो वही मुझसे उल्टे ढंग से बात करता है? जिसे देखो, वही मुझसे बदतमीजी से पेश आता है?"4

महेंद्रनाथ को अपने परिवार में जो उपेक्षा मिलती है, उससे वह अपने अस्तित्व के लिए चिंतित होता है। महेंद्रनाथ को अपनी हैसियत जानने की इच्छा तीव्र है। इसलिए वह अपने घर के सभी सदस्यों से प्रश्न करता है। घर में उसकी हालत एक नौकर से भी बदतर है। महेंद्रनाथ कहता है कि-

"मैं इस घर में रबड़-स्टैंप भी नहीं, सिर्फ एक रबड़ का टुकड़ा हूँ-बार-बार घिसा जाने वाला रबड़ का टुकड़ा।"5 आगे वह कहता है कि ष्अपनी जिंदगी चौपट करने का जिम्मेदार मैं हूँ। तुम्हारी जिंदगी चौपट करने का जिम्मेदार मैं हूँ। इन सबकी जिंदगियाँ चौपट करने जिम्मेदार मैं हूँ।"6

महेंद्रनाथ अपने और अपने परिवार के अस्तित्व के लिए बेचैन रहता है। परिवार का बिखराव उसे एक स्थान पर रूकने नहीं देता। इसलिए वह परिवार में अपने अस्तित्व को जानना चाहता है।

इस नाटक में सावित्री की बड़ी बेटी बिन्नी है। बिन्नी माँ के प्रेमी मनोज को हमदर्द के रूप में पाकर घर से भाग जाती है और उससे विवाह कर लेती है, किंतु विवाह के उपरांत भी वह अपने मायके की असुरक्षा और असंतोष के बोध से त्रस्त रहती है। अपनी इस मनः स्थिति का कारण खोजने के लिए बिन्नी बार-बार मायके आती है, क्योंकि वह समझती है कि उसके अस्तित्व को स्थापित करने के लिए उसे अपने घर से ही शुरुआत करनी होगी। बिन्नी को अपने वैवाहिक जीवन में भी अपने अस्तित्व की तलाश है। मनोज से शादी के बाद भी अपने परिवार से दूर होकर बिन्नी परेशान ही रहती है।

अपने घर के अंदर का जो वातावरण बिन्नी अपने साथ अपने पति के घर ले गई थी, वह उसे किसी भी अवस्था में सहज नहीं रहने देता। मोहन राकेश के नाटकों के पात्र अपने अस्तित्व के लिए परेशान रहते हैं। उनके पात्रों की आत्माएँ घर के इर्द-गिर्द ही मंडराती रहती हैं। सबके सब घर की तरफ सुख, परितृप्ति एवं अपनत्व के लिए आशापूर्ण दृष्टि से देखते हैं, किंतु यह आशा किसी की भी पूरी नहीं हो पाती। बिन्नी अपनी माँ से पूछती है कि "दो आदमी जितना ज्यादा साथ रहें, एक हवा में साँस लें, उतना ही ज्यादा अपने को एक दूसरे से अजनबी महसूस करें?"7

बिन्नी अपनी माँ से स्नेह करती है। माँ पूरे दिन घर और बाहर के कामों में जुटी रहती है और निठल्ला भाई व पिता का लापरवाह होना उसे अच्छा नहीं लगता है। माँ के फैसले में वह उसका सहयोग देती है। बिन्नी सहनशील लड़की है। उसके फैसलों में देखने को मिलता है कि वह विपरीत परिस्थितियों में भी सहज बनी रहती है। आधुनिक जीवन के कारण उसका जीवन त्रासदी और विसंगति से भरा हुआ है। बिन्नी अपने अस्तित्व को पाने के लिए मनोज के साथ विवाह करती है परंतु विवाह के बाद भी उसे अपने अस्तित्व की तलाश रहती है। मनोज उसे खंडित व्यक्तित्व वाली स्त्री मानता है। बिन्नी की अस्मिता की खोज उसे घर वापस ले आती है।

मोहन राकेश ने अपने नाटकों में सामान्यतया स्त्री एवं पुरुष के जीवन की त्रासदी को दिखाया है। आधे-अधूरे की किन्नी तेरह वर्ष की लड़की है, जो अत्यंत चपल, प्रखर बुद्धि एवं तेज-तर्रार, किंतु जीवन पर असमय ही गंभीर त्रासदी का आवरण छा जाता है। किन्नी घर बाहर सब ओर उपेक्षित-अपमानित, असहाय समझी जाती है जिसके कारण वह ढीठ और जिद्दी हो जाती है। किन्नी पिता, माता, भाई, बहन किसी के प्रति लगाव महसूस नहीं करती। अपनी छोटी-छोटी आवश्यकताओं की आपूर्ति से बेहद कड़वी होकर वह कैंची की तरह जुबान चलाती

है। उसकी बदमिजाजी दिन-पर-दिन बढ़ती जाती है, क्योंकि पिता की बेकारी, माँ के पुरुष-मित्रों, और बड़ी बहन के घर से भाग जाने के कारण उसे बाहरी लोगों की कड़वी बातें सुननी पड़ती हैं। किन्नी सावित्री के फैसलों पर विद्रोह करती है। उसके स्वर में कटुता आ गई थी जिससे उसके मन में माँ के लिए गलत धारणा बनी हुई है। नाटक के सभी पात्र अपने अस्तित्व की खोज के लिए परेशान हैं। किन्नी परिवार में अपनी अस्मिता को जानना चाहती है। किन्नी को अपने परिवार से प्रेम, स्नेह, दुलार नहीं मिला। इस कारण वह उम्र से पहले ही यौन संबंधों में दिलचस्पी दिखाने लगती है। उसे अपने अस्तित्व का ज्ञान ही नहीं होता।

अशोक सावित्री के प्रभावशाली व्यक्तियों से संबंध बनाने का विरोध करता है, क्योंकि ऐसे लोगों के घर आने पर वह अपनी निगाह में जितना छोटा है, उससे कहीं और छोटा हो जाता है। वह आवारागर्दी और निठल्लेपन में जीवन व्यतीत कर रहा है। सावित्री उसकी नौकरी लगवाने का प्रयास करती है जिसको वह संदेह की दृष्टि से देखता है इसके कारण वह सावत्री को भी अपने निर्णय तक सीमित रहने की सलाह देता है। उस पर पुरुष प्रधानता का प्रभाव देखा जा सकता है। जब उसकी बहन अपनी सहेली से वर्जित बातें करती है तो वह आग बबूला हो उठता है। किंतु स्वयं उन्हीं कामों को करने में उसे हिचक नहीं होती। अशोक अपने अस्तित्व को स्थापित करना चाहता है परंतु स्वयं के प्रयास से वह किसी की सहायता नहीं लेना चाहता है। अपनी बहन की यौन संबंधी बातचीत को सुनने पर उसकी प्रतिक्रिया भी उसके अपने जीवन की समस्या को चित्रित करती है।

अशोक प्रेम करता है किंतु अपने प्रेम को जीवन में सार्थक बनाने के लिए वह कोई प्रयास नहीं करता है। ''अशोक परिवारिक परिवेश के कारण विद्रोही होते हुए भी अपने पिता के प्रति संवेदनशील है। वह उनकी दयनीय दशा के प्रति सहानुभूति रखता है। पिता की भाँति वह भी निठल्ला रहना पसंद करता है। माँ के प्रयासों के प्रति उसके मन में कोई सहानुभूति नहीं है। उसे माँ का व्यवहार भौतिकतावादी नजर आता है। फोन पर जुनेजा से यह सुनकर कि उसके पिता बीमार हैं वह उनसे मिलने चला जाता है और उन्हें अपने साथ ले भी आता है।"8 अशोक परिवार की जिम्मेदारियों के प्रति लापरवाह है। उसको अपने कर्तव्य का अनुमान है। परंतु इसके बाद भी वह अनजान बना रहता है। उसके व्यक्तित्व पर पुरुष प्रधानता की छाप देखने को मिलती है।

यहाँ आधुनिक मानव के टूटे संबंधों का चित्रण देखने को मिलता है। वह माता-पिता के रीते हुए संबंधों की संतति है। अशोक टूटे हुए परिवार का एक लड़का है। सावित्री के नौकरी लगवाने के प्रयास में भी उसे अपना अस्तित्व खंडित होता दिखता है। अशोक को अपने अस्तित्व के लिए प्रयास करते हुए नाटक में नहीं दिखाया गया है बल्कि वह मैग्जीन से तस्वीरें काटता रहता है। कुल मिलाकर अशोक एक अधूरे अस्तित्व में जी रहा लड़का है।

बादल सरकार ने पगला घोड़ा नाटक को आधुनिक युग के जन-जागरण में नारी पुरुष के अस्तित्व की स्थापना, स्वतंत्रान्वेषण, अस्मिता की पहचान बनाने के लिए आकुलता दिखाकर जीवन की विभिन्न दिशाओं से साक्षात्कार करने का प्रयास किया है। पगला घोड़ा अस्तित्ववादी मनोवृत्ति से प्रभावित होकर गहन-गंभीर चिंतन की परिणति है। नाटककार ने निम्न वर्ग, मध्य वर्ग और उच्च वर्ग में रहने वाले शहरी व्यक्तियों के जीवन में उत्पन्न अंतर्विरोध, आत्महत्या जैसे प्रश्नों और अपराधबोध से कुंठित लोगों के मन की स्थितियों को मनोविश्लेषणात्मक ढंग से व्यक्त करने के लिए इस नाटक की रचना की है। पगला घोड़ा को अस्तित्ववादी और मनोविज्ञान से प्रभावित चरित्रों का नाटक कहा जा सकता है। इसके बावजूद लेखक ने इसे एक मीठी प्रेम कहानी माना है क्योंकि बादल सरकार मूलतः एक रोमानी रचनाकार हैं और उनकी रूमानियत सबसे अधिक पगला घोड़ा में चित्रित होती है।

मानव अपने समाज में जहाँ एक ओर अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करता है, वहीं आधुनिक मनुष्य मानवता से दूर होता जा रहा है, जो अपना अस्तित्व बनाने के लिए स्वार्थ साधने में लगे रहते हैं। नाटक में लड़की के द्वारा सभी पात्रों के जीवन के अस्तित्व को जानने का प्रयास किया जाता है। लड़की कहती है कि "यही तो तुम्हारा किस्सा है...यही तुम्हारा रहस्य है...बोले जाओ...सब लोग...एक-एक आदमी का एक-एक किस्सा एक-एक रहस्य। कौन किसका किस्सा जानता है? बोलो? कौन किसके बारे में जानता है?"9 लड़की चारों पुरुष पात्रों के अस्तित्व पर प्रश्न करती है। बादल सरकार ने नाटक में अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए किसी का भी सहारा लेने वाले पात्रों को दिखाया है। आधुनिकता ने व्यक्ति को एक-दूसरे से दूर करने का कार्य किया है। शशि अपने श्मशान आने का कारण कार्तिक को जाहिर करता है। शशि मलिक बाबू के द्वारा अपना ट्रांसफर रूकवाना चाहता है। शशि कहता है कि "मेरा स्वार्थ बहुत सीधा-सादा, साधारण-सा है। मलिक बाबू को राजी रखने से ट्रांसफर के झमेले से छुट्टी मिल सकती है। पोस्ट ऑफिस के बड़े अफसरों से उनकी खूब रब्त-जब्त है।"10

आज आपसी मूल्यों के विघटन का दौर है जिसमें अपने हित को साधने का कार्य हर कोई कर रहा है। समाज में जीवन जीने के लिए व्यक्ति दूसरों का सहारा लेता है परंतु विकास की अंधी दौड़ में समाज बिखरता जा रहा है जिसके कारण संबंधों में बदलाव आ गया है। शशि भी अपने हित के लिए ही आया है जिससे उसको मलिक का साथ मिल सके। कार्तिक और शशि दोनों अपने अस्तित्व को बनाने के लिए मलिक का सहारा लेते हैं।

नाटक के द्वारा समाज का सजीव चित्रण करने वाले नाटककार बहुत कम हैं। नाटक में लड़की प्रश्न करती है- "हाँ दिमाग को। तभी तो लोग कहते हैं कि यह आग की तरह है। जलाती भी है और जुड़ाती भी है। जलाती भी है और जुड़ाती भी है। नहीं?"11

स्त्री की अस्मिता का सवाल उठाकर बादल सरकार ने पुरुष की मानसिकता में होने वाले बदलाव को दर्शाया है। पगला घोड़ा नाटक में नारी के मन को व्यक्त किया गया है कि उसका मन अति कोमल होता है। नाटक में स्वभाव से भावनाओं में बह जाने वाली नारी का चित्रण हुआ है। स्त्रियाँ जीवन को आनंद और यंत्रणा के साथ जीते हुए प्रेम की अभिव्यक्त बिन्दु होती है। चारों स्त्रियों को अपने जीवन में अपने प्रेम को पाने की लालसा रहती है जिसके लिए वे अपने अस्तित्व को भी समाप्त कर लेती हैं।

मानवीय सभ्यता के विकास में नारियों की महत्ता को विश्वस्तर पर स्वीकारा गया है। संसार में नारी के बिना किसी भी प्रकार के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। अमेरिका के आलोचक इमर्सन ने नारी महत्ता को स्वीकारते हुए कहा है "मनुष्य यदि भाव है तो नारी भावना है।"12 नारी बिना पुरुष का व्यक्तित्व अधूरा है। चूँकि संसार रूपी रथ के दो पहिए स्त्री और पुरुष माने गए हैं। अतः इन दोनों की गति और स्थिति एक जैसी ही हो, तो ही समाज का विकास हो सकता है, अन्यथा नहीं। पगला घोड़ा की कथावस्तु श्मशान में एक युवा लड़की का दाह-संस्कार करने आए चार पुरुषों की आपसी बातचीत पर आधारित है। चिता पर जलती लड़की को नारी के परा रूप में, एक प्रत्यक्ष पात्र की तरह प्रस्तुत किया गया है- यद्यपि अन्य चारों पात्रों को उसकी अनुभूति नहीं होती। किंतु लड़की, पुरुष पात्रों की वार्तालाप में शामिल होती है। लड़की की विडंबना है कि वह अपने जीवन में एक पागल की विवाहिता और एक नपुंसक, एय्यास मलिक के मन-बहलाव का साधन रह चुकी होती है। यह लड़की कभी किसी का प्रेम न पा पाने की पीड़ा से दुखी होकर जीवन को अर्थहीन मान लेती है और अंततः इहलीला समाप्त कर लेती है। लड़की पुरुष पात्रों से अलौकिक रूप में संवाद करती है कि "क्या एक बार भी मेरी ओर देखने की फुरसत तुम्हें नहीं मिलेगी? मैं क्या मालती नहीं हूँ? मिलि नहीं हूँ? लक्ष्मी नहीं हूँ?"13

लड़की नाटक की अन्य स्त्री पात्रों के अस्तित्व को भी जानना चाहती है क्योंकि उसे अपने जीवन में अभाव ही मिले हैं। लड़की अपनी पीड़ा को कम करने के लिए दूसरों के अस्तित्व का सहारा लेना चाहती है।

नाटक में प्रस्तुत चारों पात्र अपने समाज से इतने जुड़े हुए है कि वह अपने किसी निर्णय को लेने से पहले उस दायरे को जानते हैं जो समाज ने बनाया है। सातू लड़की के अस्तित्व के बारे में जानने के लिए पूछता है- 'यह लड़की कौन है...'। इस पर लड़की स्वयं अपने अस्तित्व को जानने के लिए चिता से उठकर कमरे के बाहर खड़ी हो जाती है। लड़की की इच्छा है कि नाटक में प्रस्तुत सभी पात्रों की पृष्ठभूमि एक-दूसरे के सम्मुख उजागर हो सके। लड़की अपने अस्तित्व को जानने के लिए हँसते-हँसते प्रश्न करती है "मैं कौन हूँ? मैं क्या हूँ? मेरा किस्सा क्या है? तुम लोग नहीं जानते? तुम लोग नहीं जानते? मैं कौन हूँ? मैं क्या हूँ? मेरा किस्सा क्या है?"14

नाटककार ने नाटक में लड़की के आगमन से ही अस्तित्व की खोज को चित्रित किया है। लड़की सवाल करती है और समाज की असंवेदनशीलता पर चोट करती है, जहाँ स्त्री को मजाक और वस्तु के रूप में देखा जाता है। समाज में संवेदना का कोई मूल्य नहीं बचा है। लड़की के द्वारा आधुनिक होते समाज के निष्ठुर स्वरूप की ओर संकेत किया गया है। कार्तिक कहता है कि "लड़की का एकमात्र दोष यह था कि वह लड़की थी।"15

बादल सरकार ने कार्तिक के माध्यम से समाज की परंपरागत रूढ़ि को दिखाया है। जिसमें लड़की को दयनीय स्थिति में ही रखा जाता था। आज भी मानव के विचार प्राचीन ही हैं, जहाँ लड़की को कमजोर और कोमल समझा जाता है। नाटककार पात्रों के जीवन के रहस्य को नाटक में सरलता के साथ व्यक्त करते हैं। नाटक में लड़की मानव जीवन में व्याप्त रहस्य का खुलासा करती हुई कहती है, "किसकी जिंदगी में रहस्य नहीं है? और किस्सा? किसकी जिंदगी में किस्सा नहीं है? तुम? तुम लोग? तुम लोगों का कोई किस्सा नहीं है? कोई रहस्य नहीं है? सब कह डालो न। कहकर जी हल्का कर डालो। देखोगे कि तुम सबका किस्सा एक जैसा ही है-सबका एक जैसा किस्सा मिलकर एकरूप हो जाएगा।"16 नाटककार रहस्य के माध्यम से जीवन के कड़वे सत्य को उजागर करने का कार्य करते हैं। लड़की के माध्यम से पात्रों के जीवन में घटने वाली घटनाओं को व्यक्त करते हैं।

नाटककार ने नाटक में स्त्री-पुरुष के अस्तित्व को स्थापित करना चाहा है। पुरुष जीवन के सभी घटनाक्रमों को समान दृष्टि से देखते हैं। जिसके कारण उन्हें विकास के स्थान पर अपने समाज की आवश्यकता अधिक महसूस होती है। नाटक के पुरुष पात्र अपने-अपने कार्य में व्यस्त रहते हैं, लेकिन उन्हें इस बात का कष्ट है कि उन्होंने अपने जीवन में किसी स्त्री का साथ नहीं निभाया।

हिमाद्रि के जीवन में प्रेम न पाने की कुंठा, खालीपन के काँटे चुभते रहते हैं। हिमाद्रि को मिलि का प्रेम मिला था परंतु हिमाद्रि खुद को उसके लायक न बताते हुए मिलि को छोड़कर चला जाता है, वह कहता है "मिलि तुम जानती हो। तुम्हारे और मेरे जीवन, रहन सहन में इतना बड़ा अन्तर है कि...इस बार मन पक्का कर लिया है। दूसरा इंतजाम भी कर रखा है।...मेरे घर जाने से कोई लाभ न होगा। मैंने मकान बदल दिया है। वह जगह तुम्हें खोजने पर भी न मिलेगी।"17

मिलि हिमाद्रि से खुद को अपने साथ रखने का आग्रह करती है, लेकिन हिमाद्रि उसको साथ नहीं रखता जिसका पछतावा हिमाद्रि को जीवन में काँटे की तरह चुभता है। मिलि ने हिमाद्रि को कहा था कि- "तुम्हारे पैरों में गिरकर तुमसे माफी माँगू?...बोलो। बोलो। तुम वही चाहते हो? यदि हाँ, तो मैं वही करूँगी। तुम जानते हो कि तुम जो चाहोगे मैं करूँगी। क्योंकि किए बिना मुझसे रहा नहीं जाएगा क्या इसलिए तुम बार-बार मुझे जलील करना चाहते हो?"18

पुरुष अपने निर्णय को समाज के दबाव में आकर लेता है। नाटककार ने जीवन के शाश्वत मूल्य प्रेम के माध्यम से वर्तमान जीवन की उन विडंबनाओं को चित्रित किया है जिसमें हम चाहे-अनचाहे जीते चले जाते हैं। जिनका सामना प्रेम को स्वीकारने की हिम्मत होते हुए भी हम समाज के बंधनों के चलते दबते चले जाते हैं। मिलि को हिमाद्रि के बिना अपना जीवन जीने का कोई कारण नजर नहीं आता। हिमाद्रि के चले जाने पर वह अपने अस्तित्व को खोजने का प्रयास भी नहीं करती। मिली हिमाद्रि के बिना जीवन जीने में असमर्थ हो जाती है, उसको हिमाद्रि का साथ चाहिए था क्योंकि वह अपना अस्तित्व हिमाद्रि के अस्तित्व में देखती है।

नारी-पुरुष संबंध को केवल भोग के आधार पर रखकर देखने वाली परंपरागत दृष्टि अस्मितामूलक एवं व्यक्तित्व-संस्था संबधी मुद्दों को अनदेखा करके उसे एक अनैतिक एवं अवैध सामाजिक व्यवहार ठहराती है। इसका नतीजा यह होता है कि नारी की अस्मिता निरीह और भोग साधन मात्र रह जाती है। दोनों नाटकों में सभी पात्र अपने अस्तित्व की सार्थकता के लिए भटक रहे हैं। स्त्री-पुरुष संबंधों में जो असमंजस और असंगति है उसके कारण जीवन में कोई उत्सुकता शेष नहीं बची है। जीवन जीने के प्रति निराशा बढ़ती जा रही है। समकालीन जीवन के कड़वे सत्य को अधूरेपन, दिशाहीनता, भटकाव और काल्पनिक पूर्णता की खोज को नाटकों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। आज समाज में स्त्री-पुरुष के संबंधों का अस्तित्व समाप्त हो रहा है। पति-पत्नी, भाई-बहन आदि संबंधों में अपना अस्तित्व खोजने का प्रयास हो रहा है। नाटक के सभी पात्र अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेना चाहते हैं, जिससे सभी पात्र अपने अस्तित्व की खोज कर सकें।

बादल सरकार ने नारी के जीवन के मूल्य बताते हुए उसके साथ पुरुष को जोड़ने का कार्य किया है। नाटक में नारी की जिंदगी का सजीव रूप दिखाने के लिए चारों पुरुषों के द्वारा स्त्रियों की स्थिति दिखाई गई है। कार्तिक बताता है कैसे लड़की के जीवन में कष्ट आते हैं जो उसको जीवन से मुँह मोड़ने पर विवश कर देते हैं। कार्तिक कहता है कि "लड़की ब्याह करके सुखी नहीं थी। उसके पति के साथ उसका कोई संबंध ही नहीं था।"19 आगे वह कहता है- "इसके बाद लड़की विधवा हो गई या ससुरालवालों ने निकाल दिया या वह खुद ही भाग आयी।"20

लड़की के ससुराल से भाग आने पर भी मलिक उसका शोषण करता रहा जीवन में वह कहीं खुश नहीं रह पाई। श्मशान में बैठे चारों पुरुष लड़कियों के जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ थे जिनके कारण वे आत्महत्या करती हैं। हिमाद्रि के गुस्सा भर हो जाने से मिलि बेचौन हो जाती है लेकिन हिमाद्रि अपने फुफेरे भाई के लिए मिलि को छोड़ देता है। मिलि के जीवन में कोई रोचकता नहीं बचती। वह अपनी उपेक्षा के बाद भी हिमाद्रि को समझाना चाहती है। मिलि हिमाद्रि से कहती है कि- "मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ हिमाद्रि। मुझे थोड़ा समय दो..लगता है..पता नहीं..आज मुझे कुछ नहीं समझ में आ रहा है..कल शाम को तुम्हारे साथ बाहर चलूँगी..नाराज मत हो हिमाद्रि..तभी..तभी सबकुछ समझाकर कहने की कोशिश करूँगी। चलोगे न? बोलो, चलोगे न?"21

स्त्री के मन में पुरुष के गुस्सा होने पर भी एक दोष भावना उत्पन्न हो जाती है जिसके कारण वह स्थिर नहीं रह पाती। मिलि कहती है कि "तुम गुस्सा रहोगे तो मैं सो नहीं पाऊँगी। कल दिन-भर मुझे एक पल के लिए भी चौन नहीं मिलेगा।"22

आधे-अधूरे में महेंद्रनाथ के समान पगला घोड़ा में लड़की भी अपने अस्तित्व की खोज करना चाहती है। नाटक के सभी पात्र अपने जीवन के रहस्य और अपने अस्तित्व की पहचान करना चाहते हैं। नाटक में मोह-भंग की दयनीय स्थिति उत्पन्न हो जाती है। सामाजिकता, नैतिकता, मर्यादा के नाम पर व्यक्ति विवशता, कायरतावश या जानबूझकर व्यक्तिगत हित साधन के लिए पलायन कर जाता है। जिसके कारण दूसरे व्यक्ति की आशा, आस्था टूटती ही नहीं बल्कि कभी-कभी तो जीने की इच्छा ही समाप्त हो जाती है। नाटककार ने मनुष्य जीवन के सत्य को चित्रित किया है जिसके लिए उन्होंने जीवन में लक्ष्यहीनता की स्थिति को दर्शया है। लड़कियों के द्वारा जीवन को पूर्णतः निरर्थक समझ कर जीवन का अंत कर लेना कोई उपाय नहीं है।

दोनों नाटकों के माध्यम से विघटित जीवन मूल्यों का उल्लेख किया गया है। स्त्री-पुरुष के बीच के संबंधों का समकालीन मानव जीवन पर जो प्रभाव पड़ रहा है उसको केंद्रित करते हुए पारिवारिक रिश्तों के मूल्य का चित्रण नाटक के पात्रों द्वारा किया गया है।

अलगाव आज के परिवेश की मुख्य समस्या है। इसके कारण मनुष्य-मनुष्य के बीच मानवीय संप्रेषण समाप्त हो गया है। मानव अस्तित्व के सार्थकता की खोज भी अनिवार्य हो जाती है। जिसके लिए मोहन राकेश ने अपने नाटकों में आधा-अधूरापन तो खोज निकाला, पर पूर्णता की तलाश के लिए आकुलता उस अनुपात में नहीं दिखाई। इसलिए मोहन राकेश का आधे-अधूरे नाटक में पात्र अस्तित्व की खोज करते नजर तो आते हैं, लेकिन यह खोज सार्थक होती नहीं दिखाई देती। बादल सरकार के नाटक में पात्र अपने जीवन, मृत्यु, अस्तित्व एवं अस्मिता आदि प्रमुख सवालों से जूझते नजर आते हैं। पगला घोड़ा नाटक में जीवन के प्रति सकारात्मकता दिखाकर बादल सरकार मानवीय मूल्यों की स्थापना करते हैं।

संदर्भ सूची-

1 मोहन राकेश, आधे-अधूरे, पृ.संख्या-28

2 डॉ. प्रतिभा येरेकर, मोहन रकेश के नाटकों में नारी, पृ.संख्या-138

3 गोविन्द चातक, आधुनिक हिंदी नाटक का अग्रदूत रू मोहन राकेश, पृ. संख्या-90
4 मोहन राकेश, आधे-अधूरे, पृ.संख्या-57
5 वही, पृ.संख्या-57
6 वही, पृ.संख्या-58
7 वही, पृ.संख्या-45
8 सुंदरलाल कथुरिया, नाटककार मोहन राकेश, पृ.संख्या-251
9 बादल सरकार, पगला घोड़ा, पृ.संख्या-18
10 वही, पृ.संख्या-22
11 वही, पृ. संख्या-52
12 मुकुलरानी सिंह, प्रसाद के नाटकों में नारी पात्र, पृ. संख्या-17
13 बादल सरकार, पगला घोड़ा, पृ. संख्या-67
14 वही, पृ.संख्या-19
15 वही, पृ.संख्या-19
16 वही, पृ.संख्या-19
17 वही, पृ.संख्या-80
18 वही, पृ.संख्या-49
19 वही, पृ. संख्या-71
20 वही, पृ. संख्या-71
21 वही, पृ. संख्या-76
22 वही, पृ. संख्या-77

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation